

इन्द्रियों के प्रयोग में आसक्ति से बचने का प्रयास करें

- युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 18 जून।

“भंवरा में गंध में आसक्ति के कारण उसका विनाश हो जाता है, कीट-पतंगा अग्नि की चमचमाहट में आओष्ट होकर अग्नि में गिरकर नष्ट हो जाता है है। हीरण शब्द में आसक्त होने से अपने आपको कठिनाई में डाल लेता है। मनुष्य की पांचों इन्द्रियां ज्ञान का साधन हैं परंतु जब इनके विशयों में आसक्ति हो जाती है तो यह इन्द्रियां और इन्द्रियों की आसक्ति कर्मों के बंधन का कारण बनती ही हैं परंतु आदमी को समस्या में भी डालने वाली बन जाती है।”

उक्त विचार युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि इन्द्रियों का उपयोग करें परंतु आसक्ति से बचने का प्रयास करना चाहिए अनावश्यक इन्द्रियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने आठ दिवसीय पारिवारिक सौहार्द में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को शिविर समापन पर कहा कि शिविर का आस्वाद बना रहे, आस्वाद का मतलब कुछ समय आगे भी साधना में लगाया जाए। सधन अभ्यास होता है उसका प्रभाव आगे भी बना रहना चाहिए।

उन्होंने कहा कि साधना के लिए तीनों चीजें आवश्यक हैं। साधना लंबे काल तक की जाए दूसरा है कि साधना निरंतर की जाए और तीसरा है कि निष्ठा के साथ आत्मीय भाव के साथ प्रयोग चले, साधना चले तो प्रयोग में दृढ़ता आ सकती है और निष्पत्ति की अनुभूति आ सकती है।

व्यक्ति में स्वयं में आपमें गुस्सा कम हुआ है या नहीं, आसक्ति कम हुई है या नहीं इस प्रकार की चीजें अगर व्यक्ति के व्यवहार में आसक्ति कम लगती है व्यवहार में गुस्सा कम लगता है यानी व्यवहार परिष्ठीकौत लगता है आप परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकेंगे। मूल लक्ष्य यह बन जाए कि साधना का विकास हो तो शिविर के साथक इस बात पर मनन करें कि इन्द्रियों के जो विषय हैं उनके प्रति अनासक्त और अन्य पदार्थों के प्रति भी अनासक्त रहे और भाव पुष्ट हो जाए तो साधना की एक निष्पत्ति सामने आ सकती है मूल बात है आदमी के भाव शुद्ध बने।

प्रेक्षाप्राध्यपक मुनि किशनलाल ने कहा कि भावना के साथ प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करें तो अपने आपमें परिवर्तन हो सकता है और इसके साथ आगामी 1 से 5 फरवरी को जैन विश्व भारती के नीडम में होने वाले पूर्व जन्म अनुभूति शिविर की जानकारी दी।

इस अवसर पर 11 जून से 18 जून तक चलने वाले आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के समापन पर मुंबई की जयेश एम कोठारी, महिमा बोकड़िया ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये। ज्ञातव्य है कि इस शिविर में दिल्ली, मुंबई, सूरत, व राजस्थान में अलवर, सीकर, सवाई माधोपुर, डेगाना आदि क्षेत्रों से कुल 21 शिविरार्थियों ने इस पारिवारिक सौहार्द शिविर में भाग लिया।